

DPN 6332

Title : ग्रहमातृका धारणी GRAHA MĀTRKĀ DHĀRANĪ

Run. No. 7023

Cat. No.

Micro. No.

Subject DHĀRANĪ

Religion : Hindu / Bauddha

Language : ☒ Skt. / ☐ New. / ☐ Nep. / ☐ Skt.- New. / ☐ Maith.- New. / ☐ New.- Nep. /

Size in cms. 17.7 x 6.5

Folios 27
(missing 1)
Chapt. / act /

Lines (in a page) 5

Compl. / ☒ Incompl.

Author / translator

Scribe / ☒ donor

फणीन्द्रने वज्राचार्य

Date: NS / SS / VS / KS

Ruler / place

Script : ☒ New. / ☐ Dev. / ☐ Bhuj. / ☐ Ran. /

Illus. :

Material : palmleaf / ☒ paper / thyasaphu /

Condition : ☒ fine / ☐ damaged by worms, rats, water /

Beginning, colophon, post-colophon :

वोर्मपारमितादेवी जगदानन्द रोचानि ॥ तापसि उग्र रूपी च श्रुद्धि सिद्धि वरप्रदा ॥

P.T.O.

Δ आर्य्य श्री ग्रह मातृका नाम धारणी परिसमाप्तः ॥ म

ग्रह मातृका नाम धारणी

वर्जनी विद्याधनि विद्यासूत्रा मन्त्रा सर्वगुणान्तरा कर्तुमिहान
मोदनी विद्यादानधनवती रुक्मिणी स्वर्गमाता सर्वसुखोत्पत्ति
प्रीति दूरद्वन्द्वनिनीलीमा उग्रगुणवती सनपात्रमिताद
वीचर्यनीदिन्यवपिनी निधन सर्वसागल्य कोटिनी यमनी
रुद्रनिमात्रनी चण्डीयत्री सर्वशोकहारी शोभनशक्तिनीदी

॥ कोसमीविश्वनयिनी ॥ श्रीरघोपायमितादवी जगदानन्दशत्रुनि ॥ ना
 पसिउगुनपीव संखिसिद्धिचमपदा ॥ दानयुक्तामहालागाश्रद्धिना
 किनविक्रमो ॥ जगदेकाहिताविद्यासंज्ञमास्त्रावलीशुला ॥ आनि २
 पावमितादवी ॥ श्रीनखीनखीनयनी ॥ यमभियमधनीव यममा
 सनमासनि ॥ शुद्धनूपीमहागजा हंसवर्जुपलाकरी ॥ चिंतामणीधरी

॥ देवी ॥ पुरुषकथनशी ॥ निधनकृदमानुदीधनांगमधनयिः
 या ॥ केशवकमहाआदि दिव्यारुनगुरुषिणी ॥ मातृग्रीसर्ववृक्षा
 नांनत्वधकधनयनी ॥ पुन्यतालाविनिदवी ॥ लावालावचिवर्जिनी ॥
 वस्ययकिविनताव ॥ द्विपिणी ॥ लोकादनीहिन्दनीसर्वमागनां सप्त
 पातामजालनी ॥ ज्ञानशीवदमातावगुप्तगुप्तवाणीनि सनख

श्री विविश्वनाथी. चक्रवर्त्तविहावली. तथा गति महात्रया. वर्जितनिधमं
 धानिनी. कर्मधर्मनि विद्याविश्वका लारुमगुनी. वाधनिम
 र्वसत्तानां. वाधकृत्ता. गायनि. ध्यानादिमूर्ति. सम्यन्त्री शुद्ध ३
 यादयहाविनी. सर्वार्थसाधनी रुद्रास्त्री नृपाजितविक्रमा. दधीनि
 वृद्धमार्गिनी. शक्यमार्गपदार्थनि. वागीश्वरी महाशक्ति. राम प्रीति

श्रीधनंददा. क्षिप्रपाधविही सिद्धायागिनी यागमीश्वरी. ॥ ३ ॥
 सुनाहनी महाशक्ति. एतहाग्यप्रियदर्शनी. सार्थवाहकृपासुखि
 र्वतथागतामकी. नमोस्तुते महादेवी. सर्वसत्त्वार्थदायिनी. नमोस्तु
 तदिभ्यवृषिभ. वसुधैव कुटुम्बकम्. नमोस्तुते महादेवी. सर्वसत्त्वार्थदायिनी. नमोस्तु
 तदिभ्यवृषिभ. वसुधैव कुटुम्बकम्. नमोस्तुते महादेवी. सर्वसत्त्वार्थदायिनी. नमोस्तु
 तदिभ्यवृषिभ. वसुधैव कुटुम्बकम्. नमोस्तुते महादेवी. सर्वसत्त्वार्थदायिनी. नमोस्तु

श्री ॥ तं पापं आनंरुयं सदा नृना ॥ कस्तुर्वै कयं स्यात् ॥ सप्तवना नाम रुद्र
 कं ॥ अथ वाणी न संपन्नं न स प्रजातिस्तत्रा रुद्रो व्यभि. पीयशा
 दयवा व्यचनूपवान् पीयदर्शनं ॥ विप्रकृति कृमय आदयम् ॥ ४
 यजायतं ॥ वा कुरुमीश्वरं याज्ञं यश्च याज्ञं सखा वति ॥ ५ ॥
 रुद्रं मवाच गवात्रा सुमना सु चरुगाव कोलोमि नमस्तनं रुद्रि

जि. ० ॥ आर्यशीव
 रुद्रभक्तकं वदरुवि
 ॥ १ ॥ रुद्रभक्त
 जतिराजि. ॥ २ ॥ नर
 मार्य ॥ नमस्तुभ्यं

सन्ध्या गोयानामाक्ष
 नं पतिस्माक्ष
 रुद्रभक्त ॥ ३ ॥
 शवदाय ॥ ४ ॥ नमो
 य ॥ नमस्तुभ्यं

स्व मकस्मिन्मयरावात् ॥ वज्रपतिरुवगिस्म ॥ सर्वसनीलं वज्रम
 यमधिययः वज्रपाणिश्च वज्रतलोवतः वज्रसमाधिसमापनः ॥ कल
 वज्रपाणि वज्रारुगवना नरुवतः सर्ववज्रातां विद्यानां महाकायः ॥
 संरुगा ॥ वज्रसान्प्रदरायतः ॥ अक्षयमस्य सस्य हृदयि ॥ सर्व
 नापुतिहर्तः ॥ सर्वपापनाशितः ॥ सर्वसत्त्वाविडोपनेकनः ॥ सर्वसत्त्वा

५

३७५५

तां साधनकनं ॥ सर्वविद्याददनकनं ॥ सर्वविद्यासुक्तनकनं ॥ सर्व
 कर्मविडोपनेकनं ॥ सर्वगुहासाधनकनं ॥ सर्वगुहविभाजकनं ॥
 सर्वरुगायकर्मकनं ॥ सर्वविद्यासुक्तनकनं ॥ आसिद्धतां वि
 दिक ॥ सिद्धतां च भवितां नकनं ॥ सर्वकर्मप्रदं ॥ सर्वसत्त्वानां वज्र
 कनं ॥ शक्तिकनं ॥ पृथिवकनं ॥ सर्वसत्त्वानां सुक्तनकनं ॥ सर्वसत्त्वानां

हा माह न क नं ॥ ॐ मां म क म हा व नं ॥ सर्व व दान ला वा य ऊ आ च रु
 पा धि प रा ष क ॥ ॐ न मा न त्र क या य ॥ ॐ न मा थ च व रु पा रा य म
 हा य रु स नो प रु य ॥ क य थ ॥ ॐ क रु २ टा क य २ रु क २ रु ट य २ घ न २ घ ना
 य य २ स र्व स त्वा नां ॥ ॐ म ध य २ सं ॐ म ध य २ रु म य २ सं रु म य २ स र्व व द
 ना धि नि ॥ क रु २ सं क रु य २ स र्व व द ॥ घ ट २ सं घ ट य २ स र्व वि द्या ॥ व रु २

ॐ वज्र २ कट ॥ वज्र २ मट ॥ वज्र २ पुथ ॥ वज्र २ रुथ ॥ सह नीन वज्र म वजाय
स्वाहा ॥ ॐ इह लिनि २ गृह २ कन २ मिनि २ चन २ कन २ वज्र विरु योय स्वा
हा ॥ ॐ वज्र कि लि कि लय स्वाहा ॥ ॐ कट २ मट २ नट २ माट न पु माट नाय
स्वाहा ॥ ॐ वन २ वि वन २ इ सन २ मानय २ वज्र विदा वरु म स्वाहा ॥ ॐ वि
न्द २ हिन्द २ महा कि लि कि नाय स्वाहा ॥ ॐ वन्द २ काध वज्र कि लि कि

लाय स्वाहा ॥ ओं व न २ व सु किलि किलाय स्वाहा ॥ ओं जा न य २ व ऊ
 किलि किलाय स्वाहा ॥ ओं ह न २ व ऊ ध वा य स्वाहा ॥ ओं प ह न २ व ऊ
 प रुं ऊ ना य स्वाहा ॥ म निलि म व ऊ ॥ अ निलि म व ऊ ॥ प निलि म व ॥
 ऊ ॥ महा व ऊ ॥ अ प निलि म व ऊ ॥ अ मा ध व ऊ ॥ न ह निलि म व ऊ ॥ अ ध व ऊ
 जाय स्वाहा ॥ ओं ध न २ धि वि २ ध न २ रं रं रं २ ॥ ओं न मा स म न व

वा नं ॥ ओं महा व न क ट व न ल अ व ल स गु ल मा य ॥ अ निलि म व ऊ
 व ल वि ग ल न प्र कि म ॥ क ल २ टि टि टि टि टि टि ॥ न न ट र २ व न
 व ऊ न ऊ व निलि म व ऊ ॥ म वि २ व न २ महा व ल व ऊ व ऊ क ॥ का ला य स्वा
 हा ॥ ० ॥ ओं न मा व ल न य य ॥ न म र २ व ऊ पा नो म महा य क म
 ला य क य ॥ क य थ ॥ ओं ह न २ व ऊ ॥ म थ २ व ऊ ॥ ध न २ व ऊ ॥ ध न २ व ऊ

सा गङ्गकटपर्वकमह
ईमं ईश्वरं दशरुहि
मेश्वरं धिमतं महास
नरसमयनरुगवान्
मनुष्यमस्म यशश्च

साहि रुमं धनमा
रुमं ईश्वरं मइ
चैश्वर्यं न खलप
यन्मकमानन्दमा
ल्लप्यन्मनन्द

निमा

ॐ मातिगतापतिरुदयानिधानयिष्यन्ति वाचयिष्यन्ति य
यौवाप्यन्ति पवर्द्धयिष्यन्ति रुस्यसर्वाणि कार्याणि सिद्धानि
रुविष्यन्ति ॐ नमोस्तुतमहागतापनयस्वाहा ॐ गङ्गागङ्गा
गङ्गागङ्गागङ्गागङ्गा ॐ गङ्गापतिरुदयस्वाहा ॐ गङ्गापतिरु
दयस्वाहा ॐ गङ्गापतिरुदयस्वाहा ॐ गङ्गापतिरुदयस्वाहा

मं ॥ ओं कट २ मट २ दन २ विद न २ ह न २ ग २ धा व २ रु २ ज २
 २ रु २ मा २ ह २ द २ द २ दा २ प २ य २ ध २ ना २ दि २ सि २ भ २ द २ य २ रु ॥ ओं न मा
 न्ना व ना वा य स्वाहा ॥ ओं मृ २ रु २ वि २ रु २ हि २ रु २ वि २ रु २ म हा स मा रा १०
 रु २ लि ॥ म हा रु य म हा व ल य वा कु म ४ म हा रु लि द कि ४ म य पु रु ॥
 द दा य य स्वाहा ॥ ओं न मा म् रु २ म हा ग म य त य स्वाहा ॥ ओं ग २ ग २

ग २ ग २ ग २ ग २ ग २ ग २ ॥ ओं गं ग न प त य स्वाहा ॥ ओं ग म धि य रु य स्वा
 हा ॥ ओं ग म धि वा य स्वाहा ॥ ओं ग म धि पि य रु ना य स्वाहा ॥ ओं रु म
 २ स्वाहा ॥ ओं मृ २ रु २ स्वाहा ॥ ओं रु मृ २ स्वाहा ॥ ओं मृ २ रु २ स्वाहा ॥ ॥ २ ॥
 न रु ग म धि पि रु द यं ॥ य २ क श्चि रु क ल प ण वा ॥ क ल रु हि ना वा
 हि रु वा ॥ हि रु वा ॥ उ पा ष का वा ॥ उ पा ष का वा ॥ य २ क श्चि रु

५

मं कार्यमात्रकं मन्त्रसाधनम् ॥ मन्त्रपूजाया ॥ दशम-कर्म
 मन्त्रा ॥ वाङ्मूलगमनेवा ॥ लक्ष्मीसाधनम् ॥ अन्तर्धानम् ॥ कर्म
 पूजा ॥ गवतापूजास्तथा ॥ आर्यगणपतिहृदय ॥ सप्रवामान्वायि ॥ ११
 मयं ॥ सप्तमं कार्यं शिष्यि शिष्यकिनाजसंशय ॥ सर्वकर्मकर्मम
 दयमात्रयनिशंसकर्म ॥ सर्वप्रसमंगरुति ॥ दिनदिनकल्पम

७

८

रुया ॥ सर्वप्रवामान्वायि ॥ महासोहागहविष्यन्ति ॥ वाङ्
 मूलगमनकाल ॥ महाप्रसादाहविष्यन्ति ॥ पुत्रिभारविष्यन्ति ॥ न
 वास्यकार्यमहावाधियानहविष्यन्ति ॥ नकश्चिद्वक्तव्यमपुत्रि ॥ १॥
 इवमानेनलप्यन्ति ॥ हृत्प्रवामानेनलप्यन्ति ॥ नवाप्यवाधिविहारा
 पाहविष्यन्ति ॥ सजातोजातोजातिस्मनाहविष्यन्ति ॥ १० ॥ ११ ॥

०

CMS

5

10

15

20

25

वृत्ति कृत्तयुग इह सिद्धतां सत्त्वानां नाना व्याधि यनिषादि तातामः
 ल्यायेत्का न्नामार्थं यहिनायेत्सत्त्वानां ॥ १३ ॥ सर्वं कथं गतां
 वृत्तिरुपातामन्वही भवत्येवमेव दशयत्यर्थं वाग्न्यात्त्यनं १३
 सत्त्वविक्रमनं संप्रजागयत् ॥ दीर्घायुष्मां मयादायति ॥ अथ
 सत्त्वानां वलाकिं कथं वाग्निसत्त्वमहासत्त्व उच्छायासनात् ॥ १४ ॥

[illegible]

व महासमया नाधिष्ठानां विष्टिता ॥ ओंमनि २ महामनि ॥ विमनि
 महाविमनि ॥ मनि २ महामनि ॥ समनि २ समनि ॥ कथतो रुतजाटी
 पविशुध ॥ विमरुदविशुध ॥ ओंरुः वजय २ विजय २ सम २
 रु २ सम २ वय २ सर्वसदात्म विष्टितां विष्टिता ॥ ओंशुध २ वध
 २ वज २ महावज २ वजगर् ॥ जयगर् ॥ विजयगर् ॥ वजहान

गर् ॥ वजगर् ॥ वजसंरुव ॥ वरुवजिष्ठी ॥ वजं रुवः ॥ सम
 गीन सर्वसलोना ॥ कांयं पविशुधिरुवः ॥ समसर्वदासर्वग
 निपविशुधिरुमनसर्वरुथगाता ॥ सोमसास्वा ॥ यः ॥
 ओंवध २ सिध २ वाधय २ विवाधय २ सावय २ विमोचय २
 समधय २ विमोचय २ समनासावय ॥ समननसि ॥ पविशु

५॥ सर्वतथागतहृदयाधिष्ठानाधिष्ठितं ॥ जौमद्वयमहामुद्रं ॥ महा
 मुद्रामकुपदाहस्याह ॥ ॐ यं साकल्यपुरु सर्वतथागतानां हृदयवि
 क्रयानामध्वनम ॥ महासुखं दशनिवादिनी पवित्रमद्यतानी ॥ १६
 लिखित्वा ॥ रुद्रपुत्रवाचनं ॥ वाचिञ्चयमाध्वकुरु माणिस्य
 सुख्य ॥ मणुलेमुद्रा नापुजाहृत्वा ॥ पदकिं स हसकं रुद्राय ॥ य

यानि कृतानि नृपतसुखं पुरुतामं लिखित्वा ॥ धर्मधनुर्गुरुसमुप
 सृष्टं धर्मधनुर्चादेनावाग्नादमृद्वि कायाकानयित्वा ॥ मध्वेक
 विनातिचतुचत्वाविनातिवागसुखमुवासंपुष्टं ॥ १७ ॥ रुद्र
 चक्रपुत्रका ॥ पुरुषध्वदीयगन्धनेवीयादिकं सर्वपुजादिष्टपू
 जयन् ॥ १८ ॥ ॐ सर्वतथागतानां हृदयविजयानामध्वनमी

५

७

८

५ वाचयत ॥ अक इ वृद्धि न ये धम्वि म वेय ॥ ० ॥ यस्वे वंरुत
 मृप विमि नाय नाम धम्वि विना रु वी ध्वनि ॥ ० ॥ दानं दानं
 ॥ स प्रदि नाय ॥ स प्रमा साय ॥ पु आग मि ध्वनि ॥ स प्रमा साय ॥ ११
 प्रवर्षा हि जीवति ॥ स प्रवर्षा हि ॥ स प्रमि च र्वा दृ जीवति ॥ ० ॥
 प ने साय ॥ शतं जीवति ॥ स हि सां र्वति ॥ महा प्रवि ना ग य वि रुवति

॥ श्री वायु मर्थ समान्तरु वति ॥ ० ॥ ॥ इद म वा च रु ग वा ना
 सुम ना स ध रि क व रु च स द व मा न ध्व ॥ स म ग म उ ग न्ध व ध
 कि न्न ल ना का उ द्धे य स र्वा व ति पु र्वा रु ग व ना रु धि न म य न
 द न्नि ति ॥ ० ॥ ॥ इति आ र्थे श्री उ द्धे य वि रु या ना म ध म वे धी
 प वि रु स मा ध्व ॥ ० ॥ ॥ ध्व ना आ दि ॥ ० ॥ ॥ ध्व ॥

५

७

८

७ गवान्भव्यां विह्वलितस्य ऊनवनमनार्थयितुं स्यात्तामसं म
 हानाहिकुर्मध्यनसाहं मर्द्धकयादगहिरिहिकुर्गते ४ ॥ सच्चिदनेत्र
 महाभवंकेशवाधिवले महासत्त्व ॥ कउखलपुनरुगावाभारिकु २१
 नामकुयकस्य ॥ अकिरिहिकुवासाविचीनामदेवतासास्यवत्तम प ॥
 सापुनकाश्नगदुति ॥ मानदृष्टक ॥ नगसुग ॥ नवध्वन ॥ ननिव

धन ॥ नसुखात ॥ नमृकन ॥ नमृजुन ॥ नदसुग ॥ नगस्त्रिमपुन
 दुति ॥ सापिकस्याहिकुवासाविचीनामदेवतायांतामजानेति
 ॥ सापिनदृष्टक ॥ नगहरे ॥ नवध्वन ॥ ननिवध्वन ॥ नमृखन ॥
 नगसुग ॥ नदसुग ॥ नदसुग ॥ नगस्त्रिमपुनगदुति ॥ साह
 हिकुवासाविचीनामदेवतायांतामजानाति ॥ अहसापिनदृष्टक ॥

CMS

5

10

15

20

25

७ नमस्कृतं नवद्वयं नमस्कृतं नद्वयं नमस्कृतं नद्वयं
 नमस्कृतं नमस्कृतं नमस्कृतं नमस्कृतं नमस्कृतं नमस्कृतं
 पदाकमसि २ उदयमसि वनमसि अर्कमसि सूर्यमसि उर्म २२
 मसि वनमसि गुल्ममसि जीवमसि अर्कमसि सूर्यमसि
 मानिनीद्वयं १५ मां गायय उदयमसि गायय गायकूलः

मां गायय धृजय मां गायय गायकूलः मां गायय हस्ति
 यमां गायय वीरय मां गायय अर्कय मां गायय उ
 दयय मां गायय सर्वय सुधिकय सुमिकय मां गायय आ
 कूलय अनाकूलय मकिं नय अमकिं नय सिंहतामनय
 तां मनय सूर्यतामनय कयथा ३० मां लोतां मेदुतां सूर्यमसि

नि. न ऊ २ मां स्य निवानं. सर्वे सत्ता ना अ सर्व हया यद व ४ स्था
 हा ॥ अं न मा न त्कयाय ॥ अं न मा र ग व धी आ र्यो मा निं वी देव मा
 य ॥ क स्था ह द य मा व रु धि ष्या मि ॥ क य थ ॥ अं व रु नि च ला ली ॥ २३
 व मा ह मू र्वी सर्व इ ष्ट य इ ष्टा नां च रु मू र्वं वं ध २ स्था हा ॥ अं मा नि
 वी य स्था हा ॥ अं व न ल. व रु लि. व द लि २ व मा नि व मा ह मू र्वी

सर्व इ ष्ट य इ ष्टा नां च रु मू र्वं वं ध २ स्था हा ॥ आ र्यो ध न ध मा पु रा
 व ने. सर्व मा ग य द वं ध नि रु व नि. सर्व गु न कां कु नं रु वि ष्य
 ति ॥ २४ ॥ वृ द स्म वा च रु ग वा ना स्म म ना स च. स देव मा नू
 या. स न ग वृ ठ ग धै कि न्न न लो का रु ग व ना हा सि ग म स्य न. रं ति
 ति ॥ २५ ॥ वृ नि आ र्यो णी मा निं वी ता म ध न धी य नि ष स ना ष

५

०

५

४१ ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 शुद्धमास्तु कार्ये ॥ ॐ न
 मस्तु ॥ ॐ नमो भगवते
 ॥ नमस्तु भगवते ॥ नम
 तु भगवते ॥ नमस्तु भगवते ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 मास्तु भगवते ॥ ॐ नमो
 भगवते ॥ ॐ नमो भगवते ॥
 ॥ नमस्तु भगवते ॥ नमस्तु
 भगवते ॥ नमस्तु भगवते ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 २४ ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 २४ ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 २४ ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 २४ ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 २४ ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 २४ ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

CMS

5

10

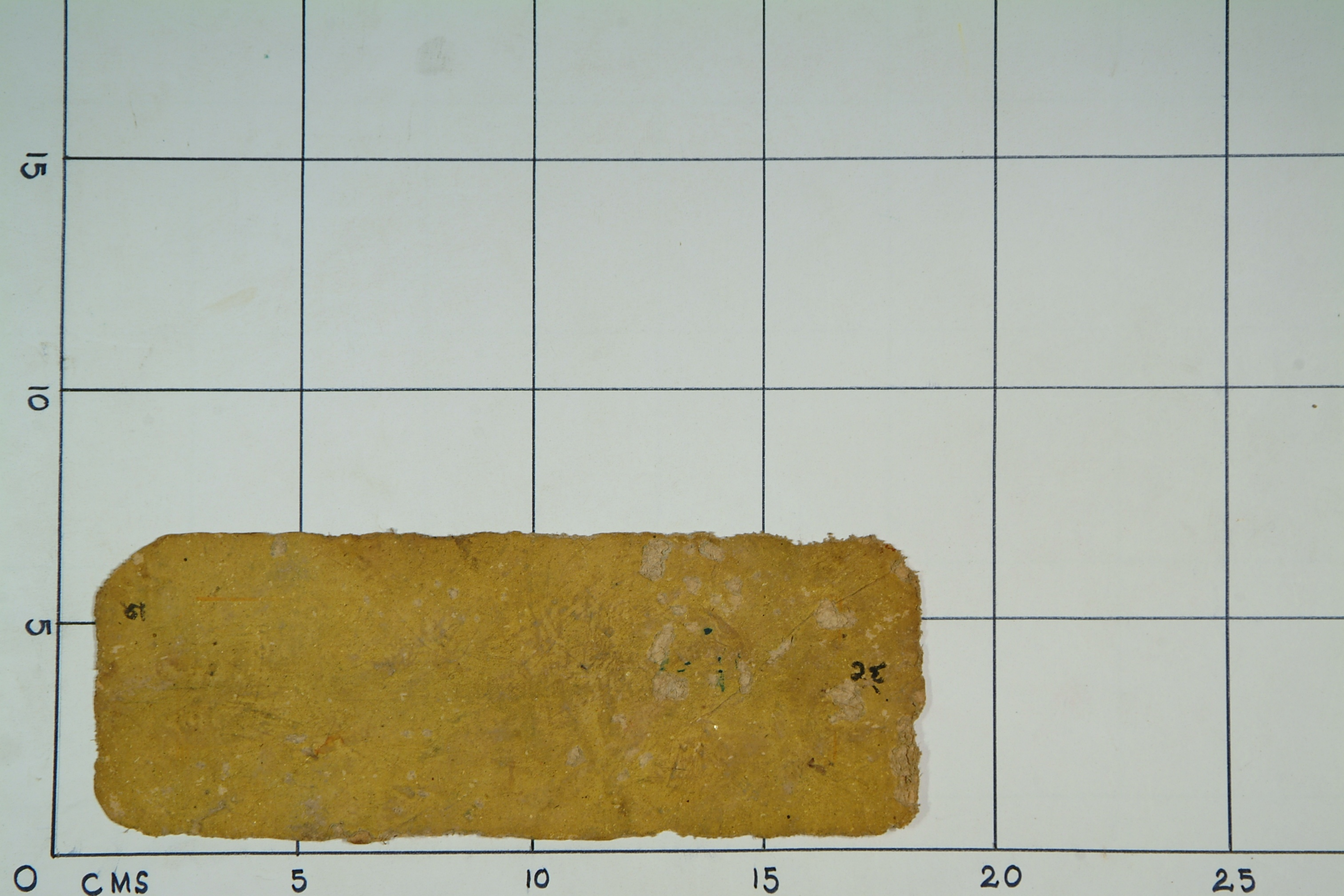
15

20

25

यस्वाहा ॥ ओं वृक्षाय स्वाहा ॥ ओं ब्रह्मण्य स्वाहा ॥ ओं शुक्राय स्वाहा ॥
 हा ॥ ओं गतिश्च माय स्वाहा ॥ ओं कर्मण्य स्वाहा ॥ ओं माइव स्वाहा ॥
 ॥ ओं कर्मण्य स्वाहा ॥ ओं वृक्षाय स्वाहा ॥ ओं वृक्षाय स्वाहा ॥ ओं यम २६
 धनाय स्वाहा ॥ ओं कुमारीय स्वाहा ॥ ओं नकुमारीय स्वाहा ॥ ओं सर्व
 गुहानां स्वाहा ॥ ओं सर्वपदार्थानां स्वाहा ॥ ओं हगवस्व स्वाहा ॥ ओं दा

रगवाणीनां स्वाहा ॥ ओं सर्वविधसंस्कृतस्व स्वाहा ॥ ॐ मानि वज्रपाद
 जिगृह्मन्तु तां सध्वयि मरुयदानि सर्वसिद्धि केशविचयच
 खल्यनः वज्रपाति ॐ मानि वनि मरुयदानि ॥ कार्त्तिक मा
 मशुक्येकसप्तमिसावय पायधिका रुवा ॥ मयचरुदधि
 लागृह नकुमारी मेगुलस्य मेधययित्वा ॥ दिन २ सप्तवागान्ध



15

10

5

0

CMS

5

10

15

20

25

5

25